बरजाल सत्याग्रह: लोक की विजय, तंत्र की हार

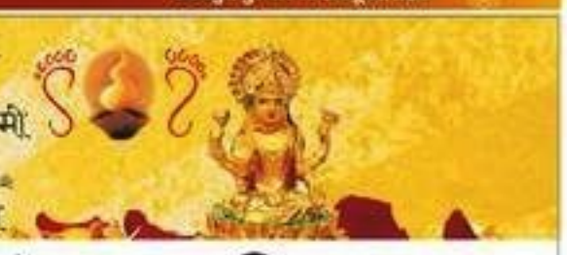

सपनों के रंग विचित्र वेशभूषा की तरह होते हैं। काले, हरे, पीले,नीले। परिचित रंगों से हट कर भी विविध रंग तभी तो सपने कहलाते हैं। सपने कुछ पूरे होते हैं तो कुछ अधूरे रह जाते हैं। कुछ सपने ऐसे भी होते हैं जो देरी से आकार ले पाते हैं। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी लिखते हैं। मैं जागृत अवस्था में सपने देखता हूं। ऐतिहासिक एवं धर्मधरा मेवाड़ के बरजाल गांव ने भी 17 मार्च 2017 को जागृत अवस्था में सपना देखा। शराबमुक्त बरजाल याने स्वस्थ समाज का। आजादी के 70 बरस बाद भी बरजाल में है। गरीबी का साम्राज्य, टूटे-फूटे,कच्चे-खपरेल मकान एवं टूटते-बिखरते परिवार जिसके मूल में है शराब का जहर। जो घर परिवारों को बर्बाद-अनाथ कर रहा है।

20 मार्च से 12 अगस्त 2017 यानि 145 दिनों का सफर। इन चार-पांच महिनों में बरजाल गांव में तीस से अधिक ग्राम सभाओं में शराब का ठेका बंद कराने का संकल्प दोहराया गया और इसी को लक्ष्य कर एक-एक घर पर दस्तक दी गई। बच्चों-बूढ़ों और जवानों ने प्रभात फेरियां निकाली, शराब से होने वाले नुकसान से ग्रामीणों को परिचित कराया गया और जन-जन तक नशामुक्ति का संदेश पहुंचाया गया। सभी ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया शराबमुक्त बरजाल बनाओ अभियान में।

12 अगस्त 2017 को पूरा बरजाल खुशियों से नहा उठा। सभी को इसी दिन का इंतजार था। फौलादी संकल्प को कानूनी जामा पहिनाने के लिए प्रातः 8 बजे अपने घरों से निकले बरजालवासी अटल सेवा केन्द्र के लिए जहां प्रशासन ने शराबबंदी के लिए मतदान के लिए तीन मतदान केन्द्र बना मतदान की व्यवस्था की थी। शराब की दुकान बंद कराने के लिए मतदाताओं को मतपत्र पर अंकित हां या ना पर मुहर लगानी थी।

देखते-देखते मतदान केन्द्र के सामने ल बी कतारें लग गई। मैं अपने सहयोगियों,आबिद अली, आनन्द श्रोत्रिय, विजयकिशोर त्रिपाठी, वीरेन्द्र पाण्डेय, मदन पालीवाल, कल्पना कर्णावट, विद्या त्रिपाठी, सीमा कावड़िया, लाड़ मेहता के साथ सुबह 9.30 बजे बरजाल पहुंचा। चारों तरफ भीड़। सभी के चेहरों पर खुशियां नाच रही थी और लोक गीतों के स्वर सुनाई दे रहे थे। ज्योंहि मैं गाड़ी से उतरा लोगों ने घेर लिया और कहा पांच सौ से अधिक वोट गिर चुके हैं। प्रतापसिंह, मोटसिंह मेरे साथ हो लिए। सामने स े ज व ा न स ि ह ,गिरधारीसिंह,प्रभुसिंह आते दिखाई दिये। सड़क पर जन सैलाब बिखरा हुआ था। सभी का मन मयूर की तरह नाच उठा, सपना जो पूरा होने जा रहा था। पर भविष्य की थाह कौन ले सकता है दिनभर मतदाताओं का जमघट रहा। शराबबंदी के इस उत्सव को देखने खेमाखेड़ा, टोकरा, छापली, बाघाना, कामलीघाट, काछबली, देवगढ़, दिवेर, आमेट,भीम, पाली, बूंदी, बांसवाड़ा, टोंकए आसीन्द, राजसमन्द इत्यादि गांवों से लोग उमड़ पड़े। तरह-तरह की चर्चाएं और अपने-अपने अनुमान।

अणुव्रत समिति दिवेर के जेठाराम सालवी, डालचंद सौलंकी, राजकुमार डूंगरवाल तथा अणुव्रत समिति आमेट के शांतिलाल सोनी, दुलीचन्द कच्छारा इत्यादि कार्यकर्ता लोगों को निर्देश दे रहे थे। महिला मंच की महिलाएं, शकुंतला पामेचा के निर्देशन में महिलाओं से स पर्क कर रही थी तो मजदूर किसान शक्ति संगठन भीम के कार्यकर्ता बस्तियों में लोकगीतों की धुनों के साथ मतदान लिए प्रेरित कर रहे थे। लोककर्मी शंकरसिंह चारों दिशाओं में दौड़ रहे थे। बरजाल की महिला कार्यकर्ता अणंदा कंवर, नर्बदा कंवर, ऐजी कंवर एक एक महिला मतदाता को घर से बाहर निकालने में संलग्न थी।

मेरी दृष्टि चारों तरफ थी। प्रशासन का भारी भरकम लवाजमा देख मेरा माथा ठनका। गिरधारीसिंह से कहा.इतनी पुलिस बल क्यों ? गिरधारीसिंह बोले प्रशासन की अपनी व्यवस्था है। आप चिन्तित नहीं हो। अपना पक्ष मजबूत है। बात आई गई हो गई। अपराह्न दो बजे एक कार्यकर्ता ने आकर बताया घुंघटवाली महिलाओं को मतदानकर्मियों ने मतपत्र उलटे पकड़ाये हैं। मैंने कहा तुरन्त रोको अनर्थ हो जायेगा। कार्यकर्ता ने कहा अब बराबर नजर है मतदानकर्मियों पर। लेकिन तब तक नियति अपना काम कर चुकी थी। सायं चार बजे तक 1700 मतदाताओं ने अपने वोट का उपयोग किया। पांच बजते-बजते सं या 1739 हो चली और बरजाल का स्वस्थ समाज का सपना पेटियों में बंद हो गया।

सायं 6.30 बजे सरपंच जवानसिंह अटल सेवा केन्द्र से बाहर निकलते ही बोले130 मतो से हम बाजी हार गये हैं। शराब का ठेका बंद कराने का जनमत हार गए, यह समाचार आग की तरह बरजाल में फैला और छह बजकर पैंतालीस मिनट पर पूरा गांव सड़क पर उतर आया। क्या बच्चे, क्या बूढ़े सभी का एक ही बोल कि हमें हराया गया है, चुनावकर्मियों ने बदमाशी की, हमारे साथ छल हुआ है, हम इन्हें नहीं जाने देंगे। मेरी आँखों के सामने पाँच हजार से भी अधिक नर-नारियों का सैलाब खड़ा था। कुछ पल के लिए मैं भी ठहर गया। क्या करूं कैसे भीड़ को रोकें जो अटल सेवा केन्द्र की तरफ बढ़ रही थी। सरपंच जवानसिंह पास में ही थे बोले आप ही रोक सकते है इन्हें। मैंने साहस कर पुलिस कर्मियों से कहा.आप चुपचाप रहे, कोई कुछ नहीं बोले। दूसरे ही क्षण मैं जवानसिंह, गिरधारीसिंह,प्रतापसिंह,डालू महाराज, तुलसासिंह, लक्ष्मणसिंह, केसरसिंह, पूर्व सरपंच करमसिंह, गंगासिंह, मोटसिंह, देवीसिंह, सेसासिंह, डाऊसिंह, हरिसिंह, माधुसिंह, मनासिंह,अणंदा कंवर, वीरेन्द्र पांडेय, विजय किशोर त्रिपाठी, आबिद अली आदि को हाथों में लिए कतार बना आगे बढ़ रही भीड़ के सामने खड़े हो गये। लोगों ने मुझे हाथों में उठा कर चबूतरे पर खड़ा किया, मैंने तेज स्वर में बोलते हुए कहा कागज पर हम लड़ाई जरूर हार गये पर मन से नहीं हारे हैं। प्रशासन कुछ भी कर ले, शराब ठेका बरजाल में खुल नहीं पायेगा। चुनावकर्मियों का प्रहार हमारी एकता को नहीं तोड़ पायेगा। इस संक्षिप्त वक्तव्य के बाद मैं अन्य सहयोगियों के साथ भीड़ के सामने खड़ा हो गया। हम हाथ जोड़कर उत्तेजित नहीं होने, हिंसा नहीं करने का अनुरोध लगातार तीन घंटे तक करते रहे। आक्रोशित भीड़ ने पत्थर, बिजली के खांभे डाल सड़क को बंद कर दिया, युवाओं ने जोश में आग लगा दी। आग को देखते ही मैं प्रतापसिंह को लेकर उस तरफ भागा, समझाया और घरों से पानी मंगवाकर आग को बुझाया। तीन घंटे तक हम लोग चीखते रहे, हाथ जोड़ते रहे, लोगों को पीछे धकेलते रहे। पूरा प्रशासन मूक दर्शक बना अटल सेवा केन्द्र में नजरबंद रहा। लोगों की एक ही आवाजए एक ही भाषा,हमारे साथ छल किया गया है। हमें मत रोकिये सर। हमारे सामने से हट जाइये सर। आक्रोशित भीड़ के स्नेह भरे शब्दों को सुन मैं कार्यकर्ताओं के साथ दौड़ता रहा और बरजाल जलने से बच गया। यह प्रभो की कृपा और गुरुओं का आशीर्वाद ही था कि पांच हजार की आक्रोशित भीड़ को नियंत्रित करने में बरजाल का नेतृ वर्ग एवं मैं स्वयं अपनी अग्नि परीक्षा में सफल रहा। अहिंसा की ताकत हिंसा से भी बड़ी होती है यह बरजाल ग्राम ने साकार कर दिखाया। लेकिन मतदान में जिन कर्मियों ने छल किया उन्होंने शाश्वत मूल्यों को न सिर्फ नकारा है वरन् गरीबी का उपहास भी किया है। बरजाल ग्राम में शराबबंदी के लिए जो मतदान हुआ वह जनमत जानने के लिए था न कि विधायक-सांसद चुनने के लिए। 74 प्रतिशत मत प्राप्त करने के बाद भी प्रचलित कानून के कारण शराबबंदी नहीं होना क्या स्वयं कानून की क्रूरता नहीं है। ऐसे कानूनों को बदला जाना चाहिये जो जनहित में जनमत का स मान नहीं करते। जनमत की अवहेलना आत्मघाती कदम होता है।

20 अगस्त 2017 को पीपलाज माता मंदिर में बरजालवासियों की महापंचायत हुई जिसमें दो हजार व्यक्तियों की उपस्थिति ने सर्वस मति से शराब ठेका के खिलाफसत्याग्रह करने का निर्णय लेते हुए शराब की दुकान नहीं खुलने देने का संकल्प व्यक्त किया। सभा में प्रशासन द्वारा 12 अगस्त को बरजाल में शराबबंदी को लेकर करा, मतदान में हुई अनैतिकता पर सर्वस मति से असन्तोष जताया तथा जिला कलक्टर को ज्ञापन देकर पुनर्मतदान कराने का अनुरोध करने का निर्णय लिया गया। महापंचायत में नि न निर्णय भी लिये गये

1. बरजाल में शराबंदी को लेकर जो निर्णय लिया गया है, वह यथावत रहेगा।

2.सामाजिक अवसरों पर शराब सेवन पर प्रतिबंध रहेगा। इस निर्णय का उल्लंघन करने वाले पर 21 हजार रूपए का जुर्माना होगा।

3.जो कोई भी व्यक्ति शराब के ठेके के लिए अपनी दुकान अथवा जमीन देगा, उस पर पाँच लाख रूपया जुर्माना होगा।

4.शराबबंदी को लेकर बनाई गई 25 व्यक्तियों की संघर्ष समिति यथावत कार्य करेगी। इसके सहयोग के लिए 25 जागरूक युवकों की एक समिति का गठन होगा।

5.बरजाल पंचायत के अनपढ़ नागरिकों को हाँ और ना पढ़ना लिखना सिखाया जाएगा।

6.शराबबंदी को लेकर महिलाओं की सभाएं आयोजित की जाएगी।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी यही तो चाहते थे कि जनतंत्र में गांवों की सरकार अपने स्तर पर ग्राम विकास के निर्णय लेकर उन्हें क्रियान्वित करें। बरजाल ग्राम पंचायत ने गांधी के स्वप्न को साकार कर दिखाया।

प्रबल जनमत के सामने मतदान परिणाम भी बौना साबित हुआ है। बरजाल ग्राम में शराबबंदी के लिए आज भी असहयोग सत्याग्रह जारी है जिसके परिणाम स्वरूप शराब ठेका नहीं खुल पाया है। यह लोकतंत्र के श्लोक्य की विजय है और श्तंत्र्य की हार है। बरजाल सत्याग्रह की अनुगूंज समीपवर्ती पंचायत खेमाखेड़ा, बाघाना, छापली में भी सुनाई दे रही है।

बरजाल ग्राम ने अपने स्तर पर 20 मार्च 2017 को शराबबंदी करने का जो निर्णय लिया उसका सकारात्मक प्रभाव हुआ जिसके फलस्वरूप. वैवाहिक आयोजनों एवं त्यौहारों पर विगत छह महिनों में शराब नहीं परोसी गई, घरेलू हिंसा का दंश रुका और गली-मोहल्लों में नारी प्रताड़ना की घटनाएँ समाप्त हुई। ग्रामवासियों का कहना है कि इन छह माह में पचास से अधिक वैवाहिक आयोजन हुए जिसमें शराब नहीं परोसने से प्रत्येक घर को पचास हजार रु की बचत हुई तथा बाल पीढ़ी के शराब चखने की लत टूटी। शराब के खिलाफखड़ा बरजाल सत्याग्रह हमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के च पारण सत्याग्रह की याद दिला रहा है।

डॉ. महेन्द्र कर्णावट
मंत्री
गांधी सेवा सदन